शान्तियाष्टक स्तोत्र

न स्नेहाच्छरणं प्रयान्ति भगवन् ! पाददद्वयं ते प्रजा ,
हेतुस्तत्र विचित्रदुःखनिचयः , संसारघोरार्णवः |
अत्यन्तस्फुरदुग्ररश्मि निकरव , व्याकीर्ण भूमण्डलो
ग्रैष्मः कारयतीन्दु पाद सलिलच् छायानुरागंरविः |१|

भावार्थ - हे भगवन, ये प्रजा स्नेह वश आपके चरण युगलों की शरण में नहीं आती . उसका हेतु तो संसार के घोर विचित्र दुःख हैं. जिस प्रकार सूर्य की प्रखर किरणों से जब भूमण्डल (पृथ्वी) तप जाता है, तब मनुष्य चन्द्रमा की किरणों से, छाया से व जल से अनुराग करता है. वैसे ही भगवान के चरणों से अनुराग होता है जब इस संसार रूपी जंगल में दुःख मिलता है.

क्रुद्धाशीविष दष्ट दुर्जय विषज् , ज्वालावली विक्रमो ,
विद्या भेषज मन्त्र तोय हवनैर्याति प्रशान्तिं यथा |
तद्वत्ते चरणारुणाम्बुज युगस् , स्तोत्रोन्मुखानां नृणाम ,
विघ्नाः कायविनायकाश्चसहसाशाम्यन्त्यहोविस्मयः |२|

भावार्थ - जिस प्रकार क्रोधित सर्प (दाढ में है जहर जिसके) द्वारा काटे हुए दुर्जय विष की ज्वालाओं की आवली

के पराक्रम (७ वेगों) को (गारूडी) विद्या, औषधि (भेषज), मंत्रित जल, हवन से शान्त किया जा सकता है.
उसी प्रकार आपके लाल कमल जैसे चरणों की स्तुति की तैयारी में उन्मुख मनुष्यों की बाधाएं और शरीर
के रोग सहसा (अनायास बिना किसी प्रयास के) ही दूर हो जाते हैं.
यह बडा चमत्कार है.

सन्तप्तोत्तम काञ्चन क्षितिधर (श), श्री स्पर्धि गौरद्युते ,
पुंसां (न) त्वच्चरणप्रणाम करणात्पीडाः प्रयान्तिक्षयं |
उद्यत्भास्कर विस्फुरत्कर शतव् , व्याघात निष्कासिता ,
नाना देहि विलोचन - द्युतिहरा , शीघ्रं यथा शर्वरी |३|

भावार्थ - जैसे उगते हुए सूर्य की किरणों के आघात से रात्री (ऐसी रात्री जो विभिन्न प्रकार के जीवों की नेत्र ज्योति
को हर लेती है) शीघ्र ही निष्कासित हो जाती हैऐसे हे शान्तिनाथ प्रभु, जो तपाये हुए उत्तम स्वर्ण पर्वत
की शोभा को भी मात करने वाले, गौर वर्ण वाले हैं, आपके चरणों को प्रणाम करने से मनुष्यों की
पीडाएं स्वयं शांत हो जाती हैं.

त्रैलोक्येश्वर भंगलब्धविजया, दत्यन्त रौद्रात्मकान् ,

नानाजन्मशतान्तरेषु पुरतो, जीवस्य संसारिणः |
को वा प्रस्खलतीह केन विधिना, कालोग्रदावानलान्-
न स्यात् चेत्तव पाद्पद्मयुगल(स्), स्तुत्यापगावारणम् |४|

भावार्थ - संसारी जीव के आगे यदि आपके चरण कमल युगल की स्तुति रूपी नदी बचाने के लिए नहीं होती तो काल (८४ लाख योनियों) रूपी भयंकर दावानल से कौन बचता. जैसे जंगल में आग लगी हो तो जानवर जो नदी में शरण ले लेते हैं वो बच जाते हैं, उसी प्रकार काल रूपी दावानल से कोई नहीं बच सकता यदि आपकी चरण कमलों रूपी नदी नहीं होती.

लोकालोकनिरन्तर प्रविततज्, ज्ञानैकमूर्ते विभो
नानारत्नपिनद्ध दण्ड रूचिर(श्), श्वेतातपत्रत्रय |
त्वत्पाद द्वयपूतगीतरवतः, शीघ्रं द्रवन्त्यामया
दर्पाध्मातमृगेन्द्रभीमनिनदा(द्), वन्यायथाकुन्जराः |५|

भावार्थ - जिस प्रकार दर्प (गर्व) से आधमात (मद में चूर) केसरी सिंह जब भयंकर दहाड लगाता है तो जंगली हाथी शीघ्र ही भाग जाते हैं. उसी प्रकार हे भगवान (लोकालोक में निरन्तर है ज्ञान विस्तृत जिसका, जो

शक्तिमान (विभो) है और जो विभिन्न प्रकार के रत्नों से जडित दण्ड से युक्त तीन छत्रों से युक्त है)
आपके चरणों के भक्ती गीतों (ध्वनी) से रोग (आमया) शीघ्र ही भाग जाते हैं.

दिव्यस् स्त्रीनयनाभिराम विपुलश्, श्रीमेरुचूडामणे
भास्वद्बालदिवाकरद्युतिहर, प्राणीष्टभामण्डल |
अव्याबाधमचिन्त्यसारमतुलं त्यक्तोपमं शाश्वतम्
सौख्यं त्वच्चरणारविन्दयुगलस्तुत्यैव संप्राप्यते |६|

भावार्थ - अप्सराओं की आंखों को भी सुहावने लगने वाले, विपुल है शोभा जिसकी ऐसे मेरू पर्वत के चूडामणि
(जन्माभिषेक के समय तीर्थंकर), प्रकाशमान बाल सूर्य की कान्ति के तेज को हरने वाले किन्तु प्रणियों को
इष्ट लगने वाले भामण्डल (७ भव दिखते है जिसमें) के धारक हे शान्तिनाथ प्रभु! शाश्वत सुख
(मोक्ष) आपके चरण कमलों की स्तुति से मिलता है. ऐसा मोक्ष का सुख जो चिन्तन से परे व
जिसकी कोई तुलना नहीं है और उपमा रहित होता है.

यावन्नोदयते प्रभापरिकरः श्रीभास्करो भासयंस्

तावद्धारयतीह पंकजवनं निद्रातिभारश्रमम् |
यावत्त्वत्च्चरणद्वयस्य भगवन् न स्यात्प्रसादोदयस्
तावज्जीवनिकाय एष वहति प्रायेण पापं महत |७|

भावार्थ - हे भगवन! जिस प्रकार जब तक शोभा सम्पन्न सूर्य की किरणों की कृपा नहीं होती तब तक कमल निद्रा के भार को ढोता है और खिलता नहीं है. इसी प्रकार जब तक भगवान के चरणों का प्रसाद (भक्ति) नहीं मिलता तब तक प्राणी पापों के भार को ढोते हैं.

शान्तिं शान्तिजिनेन्द्र शान्तमनसस्, त्वत्पाद्पद्माश्रयात्
सम्प्राप्ताः पृथिवीतलेषु वहवः, शान्त्यर्थिनः प्राणिनः |
कारुण्यान्ममभाक्तिकस्य च विभो, दृष्टिं प्रसन्नां कुरु
त्वत्पाददद्वयदैवतस्य गदतः शान्त्यष्टकं भक्तितः |८|

भावार्थ - हे शान्ति जिनेन्द्र! आपके चरण कमल का आश्रय लेने से बहुत सारे शान्ति चाहनेवाले प्राणी (जो शान्त मन वाले थे) इस पृथ्वी तल पर शान्ति को प्राप्त हो गये. हे विभो, करुणा करके मुझ भक्त की,जिसके लिये दोनों चरण ही भगवान हैं और जो शन्तियाष्टक स्तोत्र का स्पष्ट वाचन कर रहा है, उसकी दृष्टि को हे भगवन आप

प्रसन्न कीजिये अर्थात् मेरे सम्यकदर्शन को पवित्र किजिये.